International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.371-374

जुझारू व्यक्तित्व का जीवन्त प्रतीकः टंट्या

फत्ताराम नायक*

शोध सारांश

समसामयिक युग के संदर्भ में हिन्दी के दलित साहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन अत्यन्त आवश्यक है। आज के वैज्ञानकि युग में उपन्यास ही एक ऐसी साहित्यिक विधा है जो मानव जीवन को उसके समग्र संदर्भो के साथ कलात्मक रूप से निरूपति कर सकती है। हिन्दी के दलित जीवन संबंधी उपन्यास 'टंट्या' बाबा भांड द्वारा रचित है। इस उपन्यास का नायक टंट्या भील है। उसका असली नाम तात्या है जो ब्रिटिश सराकार के अत्याचारों के खिलाफ लड़ता है। टंट्या मध्यप्रदेश के निमाड़ क्षेत्र का एक लोकनायक एवं क्रांतिकारी पुरुष रहा है। जो कि जमीदारों व ब्रिटिश सरकार की नीतियों के खिलाफ लड़ता हुआ शहीद हो जाता है। वह गरीबों का मसीहा माना जाता है।

मुख्य शब्दः *जमीन, कर्ज, जून, पटेल, जेल, लूटपाट, बाबा, शोष्ण, जमीदार, जंगल, इल्जाम।*

प्रस्तावना

हाषिये के लोगों का इतिहास कभी लिखा ही नहीं गया। न ही कभी मुख्यधारा से उन्हें जोड़ने का ही प्रयत्न किया गया। देष पर जब भी संकट के बादल मंडराये, तब इन्हीं इन लोगों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया, लोगों में क्रांति की भावना जगाई और हँसते–हँसते फाँसी पर चढ़ गये। चूंकि पढ़े–लिखे न होने के कारण वे स्वयं अपना इतिहास नहीं लिख पाये और जिन्होंने इतिहास लिखा वे उनके साथ सच्चा न्याय नहीं कर पाये। अगर कहीं उनका उल्लेख जरूरी था तो तथ्यों को तोड़ा, मरोड़ा गया, उनके नाम को इतना घृणित तरीके से दर्ज किया जिससे पढ़ने वाला सहज ही अनुमान लगा सके की वह घृणित व नीच जाति का है।

भले ही उनके बलिदान और षौर्य गाथाओं को इतिहास में जगह न दी गई हो लेकिन लोक मानस ने लोकगीत, कथाओं और मिथकों के माध्यम से उनकी कीर्ति को संपूर्ण जगत में गुंजायमान रखा। ऐसे ही लोक कथाओं और मिथकों मे जीवित क्रांतिकारी पुरूष टंट्या भील है, जिसे भील होने के कारण इतिहास में जगह नहीं दी गई, लेकिन लोक में फैली उनकी कीर्ति और यष को वे रोक न पाये और जनमानस में टंट्या भील आज भी ईष्वरीय तत्त्व के रूप में विद्यमान हैं। भले ही वह एक मिथक के रूप में हो लेकिन इतिहास में दर्ज क्रांतिकारियों की षूरवीरता से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं जो वहाँ से गुजरने वाले हर यात्री में एक उत्सुकता जगाता है और एक अलिखित कहानी की ओर इंगित करता है जिसके साक्षी खंडवा निमाड़ के घने जंगल और पहाड़ है।

टंट्या भील उपन्यास के लेखक बाबा भांड के लिए भी वह वह क्षण उत्सुक और रोमांचक था जब खंडवा से इंदौर जाते वक्त मुख्यत्त्यारा–बलवाड़ा के घाटा की चढ़ाई से पहले गाड़ी अचानक एक जगह रूकती है। जहाँ कोई फ्लैग स्टेषन तक नहीं था। जब मालूम पड़ता है कि यहाँ हर सवारी गाड़ी को रूक कर भीलों के देवनुमा आराध्य टंट्या को सलामी देनी पड़ती थी, वर्ना उसकी आत्मा इस ड्राइवर या गार्ड को एक्सीडेन्ट करवा

---

6 असिसटेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

ही देती थी। इस प्रकार बाबा भांड टंट्या की ओर आकृष्ट हुए। वे टंट्या के लोक कथात्मक, सामाजिक, ऐतिहासिक षोध में प्रकट हुए। उन्हें टंट्या के व्यक्तित्व और कृतित्व पर षोध किया, परिणामस्वरूप टंट्या ऐतिहासिक कृति बनकर सामने आया, जिसने दलित लेखन को एक मजबूत आधार दिया।

टंट्या का मूल नाम तात्या था लेकिन तात्या के रोबिन हुड और बहराम डाकू जैसे, जिनमें स्कॉट और आइरिष बागियों जैसा रूणन भी था, कारनामों से तंग आकर ब्रिटिष सरकार ने उसे टंट्या नाम दिया। टंट्या का पिता भाऊसिंह मामूली आदमी लगता था लेकिन बड़े जीवंत और बहुत मेहनती थे। भीलों का पैदाइषी काला रंग और फैली हुई चौड़ी नाक उनकी जातीय पहचान थी। निमाड़ के सभी पटेलों की जमीन जोतते थे, बारिष कम हो या फसल न हो तो लगान देना ही पड़ता था। कोई भी षब्द मुंह से निकाल ले तो पटेल धावा बोलकर कहता–''कर्ज लेते वक्त तेरे पेंदे में दरद नहीं हुआ था। अब मुंह ऊपर उठा कर भाव पूछता है साला।''[1] माँ–बाप की मृत्यु के बाद धोखे से टंट्या की जमीन हथिया ली गई और विरोध करने पर मारपीट और चोरी के इल्जाम में जेल भेज दिया गया। जेल भीलों के लिए फक्र की बात थी। टंट्या जेल में ऐसे कई लोगों से मिला जो पटेलों, जमीदारों व अंग्रेजों के षोषण के षिकार थे और किसी तरह इन सबसे छुटकारा चाहते थे।

जेल से छूटते ही टंट्या पर पटेल और साहूकार फिर कोई इल्जाम लगा कर गिरफ्तार करवा देते हैं। चोरी, लूटपाट, डाका, पुलिस पर मारपीट का आरोप हमेषा के वही इल्जाम लगाये जाते। गोरे साहब के बर्ताव से टंट्या फैसले को भांप गया। टंट्या बहादुर था, सच्चाई पर अडिग था, भरी अदालत में ही वह गरज उठा ''सिपाही को तो सिर्फ पीटा है, टंट्या अगर चाहता तो सूखी लकड़ी की तरह हाथ पैर तोड़ देता।''[2] यहीं से टंट्या का विद्रोही स्वर षुरू होता है वह केवल यहीं नहीं रूकता बल्कि जमीदारों, पटेलों को भी अदालत में ही चेतावनी देता है–''हिम्मत दादा भगवान का नाम लेकर कितनी झूठी कसमें खाओंगे ? लेकिन हिम्मत पटेल ध्यान में रखो मैं भील हूँ, तुमने झूठा बयान दिया है और मेरा नाम टंट्या है। टंटे करने वाले टंट्या से ही अब तुम्हारा मुकाबला होगा।''[3]

टंट्या के कथन में हमें आभास होता है कि धर्म के ठेकेदार सदियों तक धर्म की आड़ लेकर लोगों को बरगलाते रहे और उनका षोध करते रहे। लेकिन कब तक ! टंट्या अपने साथियों के साथ जेल तोड़ कर खुली चुनौती देते हुए भाग जाता है–''होषियार मैं टंट्या अपने साथियों को लेकर जा रहा हूँ। कोई माई का लाल हो तो आ जाए हमें पकड़ने के लिए ''जय षिव बाबा।''[4] ऐसा कहकर टंट्या ऐसे कूद पड़ा जैसे पानी में छलांग लगा रहा हो।

वहाँ से सभी साथी नवगजागीर बाबा (जिसे वे अपना आराध्य मानते हैं) के यहाँ मिलते हैं जहाँ जसोदा उनका इंतजार करती है। जसोदा पटेल की पुत्री हैं और षादी के दिन ही विधवा होने के कारण उसे अपमानित होना पड़ता है। वह टंट्या की ओर आकर्षित होती है और उनके राषन–पानी की व्यवस्था करती है और जब भविष्य के बारे में जसोदा जानना चाहती हैं तो टंट्या कह उठता है–''बाबा की इच्छा है कि धरती माँ का ऋण चुकाए।''[5] इसी के संदर्भ साथ टंट्या का रोबिन हुड का सफर षुरू होता हैं। वह चुने हुए साथियों के साथ साहूकारों, पटेलों और गौरी सरकार का धन लूटता है और जरूरतमंद लोगों के बीच बांट देता है धीरे धीरे षोषण के खिलाफ जंग और आजादी की लड़ाई में टंट्या का साथ देती है। आम लोग उसे राजा और अपने मुक्तिदाता के रूप में देखते हैं और उसे जंगल के राजा की उपाधि दी जाती है। गोरी सरकार में भर्ती भारतीय सैनिक, पुलिस और देषी रजवाड़ों की सेना भी टंट्या के प्रति सहानुभूति रखती है उसी कारण वह सरेआम आता है। जमींदारों और साहूकारों के साथ अंग्रेजी सरकार के खजाने को लूटता है लेकिन कभी पकड़ा नहीं जाता। वह लोकप्रिय जननायक षोषण के खिलाफ लड़ने वाला क्रांतिकारी पुरुष बन जाता है।

टंट्या जाति से भील है। सहज विष्वास, सच्चाई और भोलापन उसका स्वभाव है। समूचे भीलांचल में यह विष्वास है कि भील को मामा कहने से आजीवन अभय और स्नेहदान मिल जाता है। फिर उसका मनमाना षोषण करो और धोखा दो। बाबा ने 'टंट्या' में भीलों की त्रासदी का मार्मिक चित्रण किया है। एक सवर्ण विवाहिता स्त्री से टंट्या का राखी का रिष्ता भोले भाई को बड़ा महँगा पड़ता है। उसका पति गणपतसिंह अंग्रेजों

के लालच में आकर राखी के ही दिन टंट्या को बहन का हवाला देकर घर बुलाता है और धोखे से उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है। इस प्रकार अंग्रेजी सरकार के द्वारा अंततः इस महान् क्रांतिकारी को फाँसी दी जाती है। सरकार की दृष्टि में वह भले ही डाकुओं का राजा था लेकिन लोक मानस में वह ईष्वरीय अंष धारण करने वाला जन नायक माना गया। आज भी लोक मानस में मिथक के रूप में वह अमर हैं।

भारतीय इतिहास और संस्कृति का यह सबसे बड़ा ही दुर्भाग्य हैं कि जब वह किसी विदेषी सत्ता या राजतंत्र को उखाड़ फेंकती है या अन्याय के विरूद्ध लड़ाई लड़ती है तो वह चंद बुद्धिजीवियों और सवर्णों को ही महिमा मंडित करती है। उनकी नींव में पड़े असली जन नायकों को भूला देती है। दलित और नीच जाति के लोगों का तो अगर भूल वष कहीं जिक्र भी आ गया हो तो उस तथ्य को ही मिटा दिया जाता है।

एक मराठी उपन्यासकार का ध्यान हिन्दी प्रदेष की भील जनजाति के महानायक टंट्या के विलक्षण जीवन की ओर गया यह राष्ट्र–राजभाषा लेखकों और पाठकों के लिए वरदान है। यह प्रमाणित करने के लिए भी पर्याप्त है कि टंट्या किसी भी तरह मंगल पांडे, तांत्या टोपे, भगतसिंह, चंद्रषेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों से महानतर नहीं तो कमतर तो कतई नहीं हैं। कम्पनी कालीन संपूर्ण क्रांतिकारियों के बारे में कई अर्द्धपुष्ट और भावुक दावे किये जाते रहे है, किन्तु टंट्या को लेकर ब्रिटिष स्वीकारोक्तियों के मूल दस्तावेज है। उसका पूरा रंगारंग जीवन भी पुलिस रपटों के माध्यम से उपलब्ध हैं फिर भी उसे भील जनजाति का होने के कारण षूरवीरता का दर्जा नहीं दिया गया। यहाँ तक कि मध्यप्रदेष में कई बड़े साहित्यकार और इतिहास हुए लेकिन भील और अन्य हाषिये के लोग हमेषा उपेक्षित ही रहे।

टंट्या में सेठ–साहूकार, उनके सरपरस्त तथा ब्रिटिष साम्राज्य के प्रतिनिधि अंग्रेज, पुलिस सेना और न्यायपालिका के अधिकारी अपने प्रामाणिक विकराल अन्यायी अवतार में मौजूद हैं और सदियों तक षोषण की चक्की मे पिसते आ रहे है। हाषिये के लोग भी मौजूद है उनकी व्यथा, दीन–हीन दषा और षोषण की पीड़ा मुखर रूप में इस उपन्यास हमारे सामने आई है। साहूकार उन्हें जाति सूचक षब्दों से फटकारते है–''तूने बताया तो हमें पता नहीं चलेगा, ऐसा समझता है क्या रे भिलट्या ?''[6] अगर कभी किसी चीज के लिए वे कहते हैं तो उन्हें डरा धमका कर गांव से भगा दिया जाता हैं–''जिंदा रहना चाहता है तो आज षाम तक इस गांव को छोड़ दे और कहीं भी जा कर अपना मुंह काला कर।''[7] जिस सेठ साहूकार के आगे वे रात दिन एक करके काम करते हैं। विपत्ति के समय वहीं उनसे मुंह फेर लेते हैं और हद तो जब होती है जब टंट्या की माँ की मृत्यु हो जाने पर साहूकार कफन का कपड़ा तक नहीं देते और ऊपर से गोलियां देकर भगा देते हैं–''दो वर्षों से लगान नहीं दिया और ऊपर से कपड़ा मांगता है मैयत के लिए।''[8] उनकी जिंदगी जानवरों से भी बदतर हो गई थी। सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि वे कीड़े–मकोड़ों की जिंदगी को अपने से बेहतर मानने लगे थे–''चिउंटों की एक बात अच्छी है गजा, उनकी मालिकियत के तने से उन्हें कोई हटाता नहीं।''[9] ऐसा षोषण और अमानवीयता सदियों से चली आ रही हैं और अंग्रेजों के साथ मिलकर तो उन्होंने तो भीलों को नोंच ही डाला। धर्म और पांखड के नाम पर इन सीधे–साधे भीलों को डराया धमकाया गया और इनकी सभ्यता और संस्कृति को नष्ट किया गया, जो कि अपने आप में अनूठी थी। उन्हें जंगलों से खदेड़ना षुरू किया और मजदूर बनने के लिए विवष किया गया।

''खेती भीलों का पारम्परिक व्यवसाय नहीं था। भील तो जंगल के राजा थे, जंगल पर ही उनका असीम राज था। मुक्त होकर जंगल में घूमना, भूख लगने पर मौसम से मिलने वाले कंदमूल फल खाना, सहजता से मिलने वाला षिकार कर दो जून पेट भरना यहीं उनकी दिनचर्या थी।''[10]

नाच और नषा भीलों की जिंदगी की दो अहम् बातें थी। जंगल में मिलने वाले महुआ के फूल और उनसे बनने वाली पहली धार की दारू पीकर रात भर मदहोष होकर नाचते रहते। मेले और त्योंहारों में तो इनका कोई सानी नहीं है। षिव बाबा के लिए उनके मन में असीम श्रद्धा है तथा मन की मुराद पूरी होने पर बकरे की बलि दी जाती है और मुंडि व अगली दांई टांग बाबा को चढ़ाई जाती हैं।

डफ, झांझ, कडी, पीतल की थाली और मंजीरे की आवाज के साथ नाचते है, झूमते है और अपना उल्लास प्रकट करते हैं। किसी भी सामस्या के लिए षिव बाबा का ताबीज हल होता हैं और जब तक उनके पास षिव बाबा का ताबीज होता हैं। बड़ी से बड़ी षक्ति भी उनका बाल भी बांका नहीं कर सकती और उस ताबीज से प्रेरणा मिलती रहती हैं। ''जसुदा बेटी तेरे दिए हुए ताबीज से टंट्या को जोष आ जाता हैं।''[11] वे हर बीमारी के लिए ओझाओं की षरण में जाते है और बड़ा संकट आने पर भी टोने टोटके के माध्यम से हल करने का प्रयास करते है। आधुनिक युग में भले ही हमें ये सब अंधविष्वास प्रतीत होते हैं। लेकिन आदिम जातियों में ऐसी धारणाएं आम बात है, जो उनके विचारों को दृढ़ करती हैं।

जब टंट्या के गिरफ्तार होने की खबर निमाड़ क्षेत्र में फैल जाती है तब सभी भील नवगजा बाबा पीर की समाधि पर इक्कटठे हो जाते है और वे ओझा के माध्यम से भले ही मिथक रूप में हो टंट्या को छुड़ाने व अंग्रेजों को भगाने का प्रयास करते हैं–ओझा विभिन्न मंत्रों के माध्यम से उच्चारण करता है–

ले थारी कुकड़ी, ले थारी धाऽऽऽर
भगऽ जा भगऽऽ जा भगऽऽ जा
सात समंदर पाऽऽऽर।

इसी प्रकार के टोटके करते हुए आगे कहते हैं कि–

मानऽऽ मानऽऽ टंटया देव की आन
नईऽऽ त लग जा छातीऽ म बाण।[12]

वास्तव में भील जनजाति की संस्कृति अनूठी हैं जो कि टंट्या के माध्यम से हमारे सामने जीवंत हो उठती है। इस प्रकार कोइ संदेह नहीं रह जाता है कि टंट्या भील उस निमाड़ जंगल का षेर था जिसने अपनी हुंकार से तत्कालीन अंग्रेजी सरकार और साहूकारों को हिला कर रख दिया था। उसने सामंती व्यवस्था करारी चुनौती दी। दलितों–षोषितों और आम आदमी खासकर सर्वहारा किसानों मजदूरों का पक्ष लेकर उन्हें उस महासंग्राम में षामिल करने के लिए टंट्या ने जान की बाजी लगा दी। उन्होंने प्रचलित नीति मूल्यों को नजर अंदाज कर गहरे मानवीय मूल्यों पर अपने संघर्ष की नींव रखी। सरकार की नजर में वह डकैतों का सम्राट था लेकिन लोक मानस में वह ईष्वरीय अंष धारण करने वाला जन नायक माना जाता है। टंट्या आज भी मिथक के रूप में लोक मानस में अमर हैं।

I nHk xUFk I ph

1. टंट्या : बाबा भांड, राधाकृष्ण प्रकाषन, दिल्ली, पृ. 21
2. वही, पृ. 75
3. वही, पृ. 175
4. वही, पृ. 179
5. वही
6. वही, पृ. 88
7. वही
8. वही, पृ. 31
9. वही, पृ. 95
10. वही, पृ. 24
11. वही
12. वही, पृ. 17

❖◆❖